भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११५

वर्ष 28 अंक : 5	15.9.2005 गुरुवार (सितंबर - अक्तुबर)	प्रति अंक : 10.00

दीपावली शुभाशीष....

सर्वत्र - इर्दगिर्द - सभी जगह पर,

तुम्हारे हृदय में भी अखंड विराजमान रह कर

समय से परे - पल पल ही

सार्वभौम सर्वोपरि परब्रह्मसत्ता ही — केवल वो ही सभी कार्य कर रही है

और

जो कुछ हो रहा है व बनता जाएगा वह तुम्हारे परम हित में ही होगा

यूं दृढ़ मान कर - स्वीकार कर

अखंड जाग्रत और अखंड सचेतता से (कोई आड़ न लेते हुए) खुले ही रहो

और

उसे ही — परब्रह्मसत्ता को ही संपूर्ण सहकार दो।

ऐसा बल, प्रेरणा और सुरुचि (आप में) सहज ही प्रगटे

यही अंतर की तीव्र अभीप्सा के साथ प्रभु चरणों में प्रार्थना है।

तो,

इतना ही अखंड स्मरण करते रहने की आदत - अभ्यास नियमित रूप से डालते जाना।

फलस्वरूप, जीवन में पल-पल सुख, शांति, बल, प्रकाश और आनंद

सहज ही मिलता जाएगा।

ऐसा चैतन्य प्रवाह अखंड ही बहता रहता है।

तो, सर्जनात्मक उद्धारक परम सत्य का ही

निर्दोषभाव से टोटल (संपूर्णतया) स्वीकार करके सर्वारंभ करते रहना।

- परम पूज्य काकाजी महाराज

आनंद-उल्लास के परम पवित्र मंगलकारी उत्सवों की आहट.....

१ अक्तुबर – परम पूज्य दिनकरभाई की जयंती

१२ अक्तुबर – दशहरा, परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन

१७ अक्तुबर – शरद्पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन
परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन, परम पूज्य दिनकरभाई की जयंती तिथि

१ नवंबर – पर्वों की रानी 'दीवाली'

२ नवंबर – अन्नकूट, नूतन वर्ष

हर साल ये मंगलकारी पर्व-त्यौहार आते हैं। पर्व दो प्रकार के होते हैं। एक लौकिक – दूसरा आध्यात्मिक ! लौकिक पर्व स्थूल आनंद और भौतिक सुख के लिए होते हैं और आध्यात्मिक पर्व शाश्वत् सुख, शांति, आनंद की प्राप्ति के लिए होते हैं और... ये सभी पर्व जगत व भक्त – दोनों के ही जीवन में एक विशेष महत्त्व रखते हैं।

वास्तव में हम प्रगट के उपासकों को तो चेतना पर लगे धब्बों को तीव्र प्रार्थना से साफ करा कर आध्यात्मिकता के मार्ग पर अग्रसर होने-प्रगति करने गुणातीत पुरुष ऐसे पर्वों के रूप में कई मौके देते हैं। अब तक के इतिहास से यह बात तो प्रमाणित हो चुकी है कि स्वसाधनों से जीव के रोग निर्मूल होना संभव ही नहीं। भगवान अखंड रखी हुई गुणातीत विभूतियों की कृपा-आशीर्वाद से ही यह अशक्य कार्य शक्य बन पाता है...

इस बात का तात्पर्य यह है कि –

दिव्य गुणातीत सत्पुरुषों–परम पूज्य काकाजी, परम पूज्य पप्पाजी, परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी, परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी, परम पूज्य साहेब, परम पूज्य दिनकरभाई के रूप में पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण सहजानंदस्वामिजी और उनके रहने का धाम अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी जब हमें प्रगट मिले हैं, तो इन गुणातीत पुरुषों की रहमोनज़र से हमें हर प्रकार की निश्चिंतता, निर्भयता मिलने के साथ-साथ हर प्रकार से हमारा मंगल ही होगा। यदि हम दिल की सच्चाई से उनके होकर जीएंगे, तो वे हमारी जड़ प्रकृति का पूर्ण रूप से दिव्यता में रूपांतर करा ही देंगे... इस बात में तनिक भी संदेह नहीं।

पहली अक्तुबर – परम पूज्य दिनकरभाई का प्रागट्य दिन ! उन्होंने अपने 'गुणातीत' वर्तन द्वारा परम पूज्य काकाजी को अमर कर दिया है और विदेश की धरती पर आज अपने व्यक्तिस्वरूप में 'गुणातीतभाव' का परिचय दे रहे हैं। अपनी असाधारण सरलता-स्थिरता के कारण सभी स्वरूपों के दिल में वे बस गए हैं।

अनेकों की प्रेरणामूर्ति बने परम पूज्य दिनकरभाई के दर्शन से शांति मिलती है, आत्मा की प्यास मिटती है, वृत्तियाँ टलती हैं।

गुणातीत पुरुषों के पास एक निर्दोष बालक की भाँति
'स्वामी-सेवकभाव'
और
उनके संबंध वाले 'ए टु झेड' क्लास तक के **मुक्तों के प्रति**
'अखंड महिमाभरी-संबंधवाली दृष्टि...'
उनके विरल व्यक्तित्व का अनुपम दर्शन कराती है। परम पूज्य काकाजी के सिद्धांतों को आत्मसात् करके पल-पल जीने की भावना से एक 'योगी' की भाँति–अक्षरधाम के फरिश्ते की भाँति वे कार्य कर रहे हैं।

लौकिक दृष्टि से परम पूज्य दिनकरभाई अमेरिका की धरती पर खूब ऊँचे ओहदे पर तो हैं ही, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से भी परम पूज्य काकाजी का अद्भुत सेवन करके अनेक कल्याणकारी गुणों से वे समृद्ध हैं। शिकागो में ही **परम पूज्य काकाजी** एक बार पू. महेन्द्र बापू को बोले थे कि –

*'बापू ! अमेरिका में मेरी सभा में लाखों लोग इकट्ठे हो जाएं या मुझे लेने आने २०० मर्सीडीज़ गाड़ियों की लाईन लग जाए, मेरी शोभायात्रा निकले – वगैरह में मुझे तनिक भी रस नहीं है। मैं यह सब कर सकता हूँ–ऐसी सामर्थ्य मुझे में है। तुम्हें पता नहीं कि तुम्हारा दादुकाका सोने की पालकी में घूमे ऐसा है, पर इन सबसे क्या बड़प्पन ? इसके बजाय **अमेरिका में पू. दिनकरभाई जैसे यदि पाँच तैयार हो जाएं तो मैं समझूँगा कि सारे अमेरिका को सत्संग हो गया** और पचास-सौ आत्मबुद्धि-प्रीति वाले कुटुंब तैयार*

हों, तो अपना उद्देश्य पूरा हुआ मानना। फिर तो, वे सब कार्य करेंगे।'

यह है परम पूज्य दिनकरभाई की स्पिरीच्युअल पोटेन्शियालिटी ! और... परम पूज्य काकाजी की यह परावाणी सार्थक होती आज नज़र आ रही है।

सच, परम पूज्य काकाजी के संबंध में कई व्यक्ति आए और उन्हें सुखी करने परम पूज्य काकाजी ने खुल्ले हाथों से आशीर्वाद लुटाए... पर, उस अनमोल पूँजी को संजो कर बहुत कम - गिनीचुनी विभूतियाँ ही संभाल पाईं।

यह हम सभी का खूब अहोभाग्य है कि उस पूँजी को शाश्वत् करे **परम पूज्य गुरुजी -परम पूज्य दिनकरभाई-परम पूज्य भरतभाई** जैसों ने अत्यधिक कृपा करके हमें अपनी दृष्टि में लिया और खूब परिश्रम लेकर लाड़ लड़ा-लड़ा कर, अनेक स्मृतियाँ देकर प्रभु के मार्ग पर चलने हमें जाग्रत रखते हैं। कभी प्यार से, कभी कड़ा रुख ग्रहण करके, डाँट से, कभी हमारी भूलें नज़रअंदाज़ करके, हमारे लिए खुद भजन करके, हमारी मूल प्रकृति-स्वभावों की जड़ता छुड़वाने रात-दिन देखे बिना वे निरंतर अनथक् प्रयास कर रहे हैं। पर, अब हमारा फर्ज़ बनता है कि हम उन्हें अपना मन सौंप कर उनके इस परिश्रम को अपने वर्तन द्वारा नई उमंग, नए उल्लास से नए वर्ष में सार्थक करने लग पड़ें।

गुणातीतभाव वाले साधु बनना - हमारा जीवन लक्ष्य है। हठ, मान, ईर्ष्या के अपने अनंत दोषों के कारण संबंध वाले भक्तों की हम कभी भी उपेक्षा ना करें... हमारे गुरु कैसे ? हम किस साधुता की परंपरा से ? ***'योगी परिवार के हम जो हुए, खानदानी ना अपनी चूकें हम...'*** भजन की इस पंक्ति के शब्द जाग्रत, स्वप्न– यहाँ तक कि सुषुप्ति अवस्था में भी हमारे जीवन का आधार बने। हम सच्चे अर्थ में 'भक्त' बनें, 'सेवक' बनें, भीतर से 'साधु बनें'.... और ऐसे गुणातीत स्वरूपों का सेवन करने उनके ही पवित्र चरणार्विंद में अति सच्चेभाव से इन मंगलकारी दिनों प्रार्थना करें...

दशहरा – यानि विजय का प्रतीक ! परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा ग्रहण करने का दिन ! असत्य पर सत्य की विजय - आसुरी तत्त्वों की हार व दैवीय शक्ति की जीत। सो, कोई भी मुमुक्षु यदि सच्ची अभीप्सा से गुणातीत पुरुषों का सेवन करेगा, तो उसे अध्यात्म के मार्ग पर अवश्य विजय प्राप्त होगी।

शरद्पूर्णिमा – यानि पूर्ण चन्द्रमा की भाँति खिल कर आध्यात्मिकता की पूर्णता के शिखर पर पहुँचना। इसी दिन मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य होना भी उनकी पूर्णता का संकेत देता है !

'गुणातीत' ज्ञानमार्ग को अखंडित रखने पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण श्री सहजानंदस्वामी महाराज के साथ मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी पृथ्वी पर पधारे। अद्वितीय व अकल्पनीय-ऐसा अतिसमर्थ का ज्ञान उन्होंने पृथ्वी पर प्रगटाया। धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि अनंत कल्याणकारी गुण को पाए होते हुए भी अतिरांकभाव से, अतिगरीब प्रकृति धारण करके बिलकुल गुलाम बन कर, अतिशय अल्प बन कर सामान्य जैसे जीवों की ब्रह्मदृष्टि से सेवा करी, विनय किया और उनमें दिव्यभाव रखा ! **'माँ' की तरह इन्हें संभाले, निभाए और महाराज में ही जोड़े।** फिर भी, स्वयं की सर्वोच्च ब्राह्मीस्थिति का किसी को ज़रा-सा ख्याल आने नहीं दिया। इतना ही नहीं, **साकारब्रह्म ने अतिसमर्थ का ऐसा ज्ञान पृथ्वी पर सदा साकार रखा !** अनादि सिद्धमूर्तियों सरीखे ५०० परमहंसों के बीच इन्होंने अपनी प्रतिभा अनोखी छोड़ी ! अजोड़ साधुता में वरिष्ठ होने के बावजूद भी वे पहचाने नहीं गए; क्योंकि सच्चे गुलाम की भाँति गरजु बन कर–अज्ञानी होकर महाराज के अति अल्प संबंधवाले समाज की भी अतिशय महिमा से सेवा ही करा करी ! लेकिन, महाराज ने उनकी पहचान करवाई।

महाराज ने सद्. मुक्तानंदस्वामी को पूछा था : इस साधु को पहचानते हो ? मुक्तानंदस्वामी बोले– *'साधु बहुत अच्छे हैं..... हमेशा चढ़ता रंग ही दिखाई देता है।'* तब महाराज बोले – *'तुम समझते हो ऐसे ये साधु नहीं....'* और महाराज ने उनकी अगाध व अपरंपार महिमा कही, तब सद्. मुक्तानंदस्वामी को सानंद आश्चर्य हुआ। कई कितने वर्षों तक मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को उन्होंने अपने पत्तर में से प्रसादी दी थी, लेकिन यह महिमा जानने के बाद सद्. गुणातीतानंदस्वामी जब प्रसादी लेने गए थे तब मुक्तानंदस्वामी बोले – ***'अब तक गंगा उल्टी चली, अब सीधी हो गई। अब प्रसादी नहीं मिलेगी।'***

साकार ब्रह्म ने भी गुणातीत पुरुष की रीति, नीति और स्थिति स्वयं 'सेवकभाव' से वर्त कर जो समझाई उसके लिए कोटि-कोटि धन्यवाद ! 'सेवकभाव' ही तो गुणातीत का स्वभाव है।

उनका यह गूढ़तम रहस्यज्ञान आज भी गुणातीत पीढ़ी के प्रगट वारिसदारों द्वारा मुमुक्षुओं की आत्मा की भूख को तृप्ति दे रहा है... उन्होंने कृपा करके अपनी दृष्टि में आए मुमुक्षुओं के लिए सदाकाल के लिए **'अर्चिमार्ग'** खुल्ला रख दिया। ब्राह्मीशक्ति सभी के लिए मैदान में खुल्ली रख दी। जीवों पर इस अपार अनहद् कृपा-दया का पार हम भला कैसे पा सकेंगे ?

ऐसे गुणातीत स्वरूप **परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी को पार्षदी** और **भागवती दीक्षा** देने के लिए गुरुहरि योगीजी महाराज ने **दशहरा** व **शरद्पूर्णिमा** के दिनों को विशिष्ट रूप से चुने–यही परम पूज्य स्वामिजी की **'नैसर्गिकी ब्राह्मीस्थिति'** का निर्देश है, तो दूसरी ओर इसी दिन परम पूज्य दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि भी मानो उनके **'ब्रह्म के साधर्म्य'** का संकेत देती है...

चैतन्यदर्शी गुरुहरि योगीजी महाराज की दृष्टि ने परम पूज्य स्वामिजी को जो परखा उससे हम सभी धन्य-सनाथ हो गए। आइए, परम पूज्य स्वामिजी द्वारा १९७२ में 'दशहरा' व 'शरद्पूर्णिमा' निमित्त करी निम्न कथावार्ता से **'रोज दीवाली' और 'नूतनवर्ष'** मनाने हम कृतनिश्चयी बनें !

सूर्य उगने से अंधेरा जाता है, अन्न खाने से भूख मिटती है, उसी प्रकार प्रत्यक्ष स्वरूप से सच में संबंध किया हो तो निश्चिंतता प्रगटेगी ही-सदा सुखी होंगे ही। महाराज ने वचनामृत वड़ताल ५वें में कहा कि–

सौ जन्म में 'उत्तम भक्त' होने वाला हो वह इसी जन्म में उत्तम होता है, यदि उत्तम लक्षण वाले संत की भगवान जैसी सेवा करे तो !

भगवान का गुण है ही–'दयानिधि'। जीव को सुखी करने के लिए केवल वे विचरण करते रहते हैं। वचनामृत मध्य ६० में भी महाराज ने कहा है कि–

हरी 'भाजी' भी हम ना तोड़ें और सेवकराम जैसे कृतघ्नी की सेवा करने भी तैयार रहें–ऐसा हमारा अतिदयालु स्वभाव है। जेतलपुर की वेश्या और हर रोज २०० चकलों की जीह्वा खाने वाले मानभा और मुंजासुरा जैसों का भी कल्याण करना वह हमारा स्वभाव है; तो फिर हम हमारे भक्तों को दुःख कैसे देंगे ?

लेकिन साथ ही कहा कि–

यदि कोई किसी भक्त को क्रूर दृष्टि से देखता हो, तो ऐसा मन करता है कि उसकी आँख फोड़ दूं और भगवान के भक्त को कोई हाथ से दुःख पहुँचाए, तो उसका वह हाथ भी काट डालूँ।

यूं, भगवान को भक्त कितने प्यारे होंगे?

वचनामृत मध्य ४५ और अंत्य. १४ के मुताबिक नरक में ले जाएं ऐसे प्रारब्ध भी अच्छे हो जाएं और अति तीक्ष्ण ऐसे बुरे पापकर्म का भी नाश हो जाए एवं वचनामृत प्रथम ७२ और जेतलपुर ५ में तो महाराज ने खूब-खूब आशीर्वाद दे दिए कि–

किसी तरह से भी उबरने का रास्ता न हो ऐसे कष्ट में भी रक्षा करूँगा।

उसी वचनामृत में महाराज ने स्वयं प्रश्न किया कि–

मेरी मर्जी से सब होता है, सदा दिव्य-साकार-सर्वोपरि हम हैं, फिर भी हरिभक्त को क्यों दुःख आता है ?

और महाराज ने ही उत्तर किया कि–

भगवान भजने में जितनी खोट रहती है, उतनी उसके सभी कार्यों में बरकत नहीं आती।

तो अब, अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांतानुसार भगवान भजना यानि– जिस समय में जो प्रत्यक्ष स्वरूप विचरण करता हो, उसका ही वचनामृत मध्य ३२ के मुताबिक ध्यान, भजन, स्मरण, रटन-उसकी ही कथा, उसकी ही आज्ञा, उसके प्रति की ही वफ़ादारी और उसे ही राजी करने की तमन्ना रखनी और केवल उसकी ही रुचि और मर्जी में वर्तना–वही सच्चा भजन कहा जाए और इस तरह यदि 'भजन' करें तो बिना कोई दुःख के सुख से-लहजत से प्रभु भजे जाएं और अक्षरधाम का सुख भोगते हो जाएं। स्वामी की बात के मुताबिक *'मखमल के बिछौने में बिठा कर प्रभु भजाने हैं'*– वह बात सिद्ध हो जाए ! वचनामृत अंत्य. १३ के मुताबिक *जिसने अपना सर्वस्व संत को सौंप दिया हो ऐसे भक्त का 'प्रारब्ध' भगवान बनते हैं।* यानि– उसकी संपूर्ण जिम्मेदारी भगवान स्वयं लेते हैं और सुखी करते हैं। सो, भगवान की इच्छा से सुख-दुःख आ पड़े, तो बेबस नहीं हो जाना चाहिए।

पू. काकाजी और पू. पप्पाजी के जीवन में व्यवहारिक एवं सत्संग के बहुत बड़े तूफान आए, लेकिन उन भयंकर बवंडरों में वचनामृत प्रथम ६२ के मुताबिक – गुरुहरि को ही काल, कर्म और माया के प्रेरक और नियंता मान कर उन्होंने भजन का ही बल लिया, तो वे खुद भी काल, कर्म और माया से परे हो गए और संबंध वाले सभी को भी आज ऐसे ही निश्चिंत कर रहे हैं।

स्वामी की बातों में कहा है कि– *भगवान और साधु मिल जाने के बाद भीतर में दुःख आने नहीं देना, लेकिन प्रारब्ध वश जो आए उसे भुगत लेना।* यानि– रक्षणहार और तारणहार मिले तभी से हम निश्चिंत तो हो गए हैं, लेकिन प्रारब्ध के थर जब धुलते हैं, तब मन में ज्वार-भाटे आएगें ही और जब देहभाव टाला जाए – हमें अपनी प्रकृति से विरुद्ध वर्तना पड़े तब उदासी तो आएगी ही; फिर भी– ऐसे समय हृदय में एकांतिक संत के संबंध का बल रहता है ही। ज्यादातर तकलीफ तो कुरेद कर दुःख खड़े करने पर आती है और उसमें –

(१) **शिक्षापत्री के मुताबिक व्यवहार न करें, सो दुःख आएगा ही।**

(२) **अभाव-अवगुण में जाएं, यानि – नया प्रारब्ध खड़ा करके दुःखी होना ही है।**

(३) **संत का संबंध होने के बाद भी अहंभाव युक्त हुए संकल्प, भाव और क्रियाओं तथा मनमाने ढंग से जीया जीवन देर-सवेर भी बड़ी उदासी खड़ी कर देगा ही।**

तो, सुख-सुख से भजन करने के लिए एकांतिक साधु के चरणार्विंद में 'मैं तेरी गाय' बन कर पड़े रहना है या तो बिलकुल सरल होकर उनकी आज्ञा में वर्तते ही जाना है।

पू. काकाजी और पू. पप्पाजी ने एक अद्‌भुत और दिव्य ब्रह्मसमाज खड़ा किया है। तो, हंस बन कर मोती का ही चारा चरते रहना है। आज तो सत्संग में हीरा, माणिक, मोती, सोना वगैरह कीमती रत्न तैयार हो गए हैं। अब– सिर्फ गुणगान गाकर हम 'ब्रह्मरूप' ना हों वह हमारी ही कोई खोट कही जाए।

लेकिन, कैसी भी कसनी सह कर-खुद पिघल जाकर केवल स्वरूप की ओर ही नज़र रखें और 'सुहृद्' बनने संपूर्ण प्रयत्न करें तो नूतनवर्ष की नई प्रभात के साथ-साथ अंतर में भी दिन प्रतिदिन नई जागृति-नया प्रकाश-नए दिव्य अनुभव और नया आनंद बढ़ता ही जाएगा।

तो अब, नूतनवर्ष के नए दिन हैं... एकांतिक सिद्धपुरुषों का आशीर्वाद अखंड बरसता ही रहता है–तब उस आशीर्वाद के पात्र सभी बनें और उस हेतु प्रत्यक्ष धाम, धामी और मुक्त खूब ही बल सभी को दें ऐसी अंतर की प्रार्थना !

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

✱ वचनामृत अंत्य. ११–'सीताजी की समझदारी' को समझाते हुए परम पूज्य काकाजी कहते थे कि–

भगवान जब तक हमारे मनोरथ-संकल्प पूरे करते रहें,
साधु हमारे ढंग के मुताबिक वर्तता रहे
और
हम जो सोचें वैसे सब चलता रहे
तब तक अहोहो '**निहालकरण-निहालकरण**' !
पर,
जैसे ही हमारे मन से हमें थोड़ा-सा अलग करने की कोशिश करने जाएं,
हमारा मन मरोड़ें
तो तुरंत '**तेलकरण-तेलकरण**' !

✱ हमें सत्संग में मिट्टी के बर्तन की भाँति नहीं रहना चाहिए–
मुझे पूछा-नहीं पूछा,
मुझे तो फंक्शन के बारे फोन नहीं आया,
मुझे तो गिना नहीं... वगैरह।
अपने घर में–अपने लड़के की शादी होती है तो क्या हम ऐसा कह पाते हैं कि मुझे पता ही नहीं था...! बस, इतना ही सत्संग करना है।

✱ साधु का ९८ प्रतिशत समय ये छोटी-छोटी बातें यानि– सामान्य व्यवहार सिखाने में बीत जाता है।

✱ करीब २२५ साल पहले श्रीजी महाराज ने 'शिक्षापत्री' में हिसाब नित्य लिखने की बात लिखी है। साथ में यह भी लिखा है कि अच्छे अक्षरों से हिसाब लिखना चाहिए। यानि– दूसरा व्यक्ति आसानी से-ठीक से पढ़ पाए। '१' की संख्या को '९' ना पढ़ा जाए।

✱ 'मंदिर' और 'संतों' का हमेशा गुण ही लेना चाहिए। जबकि हम तो उल्टा करते हैं। आपस में कानाफूसी करते रहते हैं कि– मंदिर में तो ऐसे ही हैं... क्या होता है वहाँ, मुझे पता है।
हम सोचें कि कभी हम अपने घर वालों के अवगुण देखते हैं क्या ? वो हमें दिखाई ही नहीं देते।

✱ गुरुहरि योगीजी महाराज ने बताया कि सत्संग में प्रगति करने के साधन **'श्रद्धा, गरज और संत समागम–गुण, विनय और सेवा'** है। अर्थात् **सत्संग में जिसे निरंतर आगे बढ़ना हो वो इस रास्ते पर चले।** दूसरी ओर सत्संग से हटने यानि पतन का साधन है कि सत्संग में रहते हुए भी हम अपने स्वभावों-हठ, मान, ईर्ष्या का निरंतर पोषण करते जाएं।

✱ गुरुहरि योगीजी महाराज हर एक बात में हमेशा गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का नाम आगे रखते। अपना नाम कभी आने ही नहीं देते... कुछ भी होता तो वे तुरंत कहते शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद मिले हैं। दिखावे के लिए - कहने के लिए या विनम्रता जताने नहीं, बल्कि दिल की सच्चाई से वो कहते थे।

✱ हमें साक्षात् स्थान में यानि परम पूज्य काकाजी जैसे सत्पुरुष के पास बैठना मिला, वो ही हमारा बहुत बड़ा अहोभाग्य है। भगवान की हम पर यह बहुत बड़ी कृपा हो गई है।

✱ सत्पुरुष हमें जो आशीर्वाद दें, उन्हें हम झेलें; फिर उन्हें संजोकर रखने चाहिए। कोई खूब कीमती चीज हमें मिल गई हो तो उसे छुपा कर रखते हैं कि कहीं कोई लूट ना ले। गरीब बन कर उसे जो छुपाए रखे वो अक्लमंद बोला जाए। ठीक उसी तरह ऐसा - **इतना अच्छा सत्संग हम स्वभाव से गरीब होकर संभाल कर रखें।** जबकि हम तो उल्टा ही करते हैं, दूसरों पर रौब झाड़ते हैं कि मुझे क्यों कुछ समझते नहीं ?

हमारे लिए हमें मिले भगवान व संत ही अनमोल पूँजी हैं। सो, उनका संबंध खूब संभाल कर रखना चाहिए।

✱ कई बार कई मुक्त बात करते हैं कि जो-जो परम पूज्य काकाजी के संपर्क में आए हैं, वे सभी तरक्की को पाए हैं; सब के पास अपनी गाड़ी, अपना मकान वगैरह हो गया। परम पूज्य काकाजी के आशीर्वाद से सब हो गया ! पर, इतना सोचें कि परम पूज्य काकाजी जैसी विभूति के प्रति हमारा यह मूल्यांकन किस प्रकार का ? **अगर इस दृष्टि से ही नापेंगे, तो फिर जगत के सभी धनवानों पर परम पूज्य काकाजी के बहुत आशीर्वाद कहे जाएं ना !**

कहने का तात्पर्य यह है कि **बड़े पुरुषों की महिमा - गरिमा कार, बंगला, लड़का, पैसा वगैरह मिलना- इन मूल्यों से आँकी नहीं जा सकती।** बल्कि **भीतर में शांति हो व शुभ संकल्प बना रहे-वह उनकी सच्ची प्रसन्नता की निशानी है।**

✱ **'अक्षरधाम का सुख'** अर्थात् अखंड शुभ संकल्प व भीतर में शांति ! हमारे भीतर में शुभ संकल्प अखंड रहने चाहिएं। हम जब सत्त्वगुण में होते हैं, खुशमिज़ाज होते हैं या भगवान ने हमारा कुछ काम कर दिया होता है, तब तक हमारे भीतर शुभ संकल्प टिकते हैं। पर, थोड़ा-सा भी यदि हमारा मन मचेड़ दिया होगा या किसी से हमारी ठन गई होगी तो हमारे भीतर की शांति बनी नहीं रहती।

✱ **प्रभु का कर्ताहर्तापन दिल की गहराई से माना नहीं जाता।** हम सच में भीतर से यह नहीं मानते कि **जो हो रहा है, वह** सही हो रहा है-सत्य ही हो रहा है। **परम सत्य स्वरूप ही इन सब के नियंता हैं।** यह दिल से मानना-वो अब करना है।

✱ निरंतर समागम यानि–थोड़े दिन किया, फिर छोड़ दिया ऐसा भी नहीं–निरंतर करना।

दूसरा अर्थ है – 'अंतरायरहित'-ज़रा भी पर्दा रखे बिना करना चाहिए। पर, **हमारी अच्छाईपेशी के प्रदर्शन के कारण अंतराय रहता है।**

जैसे हम कई काम खूब व्यवस्थित करते हैं; पर उसके पीछे हमारी भावना संत को राजी करना है–वो ही मात्र नहीं होती ; बल्कि कहीं मुझे डॉट ना पड़े, कोई टोक ना दे–सब के सामने मुझे सुनना ना पड़े–मैं हल्का ना पड़ जाऊँ-सो व्यवस्थित करते हैं। हमें तो संत को राजी मात्र करने ही हर क्रिया-सेवा अच्छी तरह कर लेनी है। **दोनों प्रकार की भावना में जमीन-आसमान का फर्क पड़ जाता है।**

✱ किसी मुक्त ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को प्रश्न पूछा कि सांप तो चंदन के पेड़ से ही लिपटा हुआ होता है, तब भी सांप में खुश्बू व ठंडक देने के चंदन के गुण क्यों नहीं आते ?

स्वामिश्री ने इस प्रश्न का अद्भुत जवाब दिया कि– *सांप चंदन के दरख्त से लिपटा हुआ तो रहता है, पर अपना मुँह भी तो बाहर की ओर रखता है।*

इसी प्रकार हम मंदिर तो रोज आते हैं, साधु से जुड़े भी हैं लेकिन हमारी नज़र-वृत्ति जगत की ओर रहती है। सो, सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर पाते।

(राग– आए थे हम इक रोज मेहमान बन के...)

आए थे हम मंदिर में दर्शन करने,
खबर क्या थी प्रगट प्रभु, हमको पकड़ लेंगे यूं।

जगत के झूठे रिश्ते निभाए जो हमने,
सत्संगीओं से ही फिर, नाते सच्चे वो जुड़ जाएंगे।
और हम क्या कहें आपसे बस,
करने को आए हैं इकरार,

काकाजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार ?

कड़ाके की सर्दीओं में भी, खुली जीप में आप आते,
कड़ी धूप में रिक्शाओं में, मिलने हमें आप आते,
देखते-देखते इस मिलन में, बढ़ता गया आपका प्यार,

काकाजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार ?

ले लिए गम सब हमारे, हमारे लिए मुस्कुराए,
थी आपको जो उम्मीदें, हम वैसे तो जी न पाए
'आज तक का सब माफ' यूं कहकर, माफ करते गए आप हर बार,

काकाजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार ?

दुःख दर्द जो, बाँट ले एक दूसरे के,
मुक्तों का साथ हमको, आपने ऐसा दिया,
गाज गिरी, आँखें भले हो गई नम,
सबने मगर एक भजन, का ही सहारा लिया,
आत्मबुद्धि, प्रीति ने तुम्हारी,
प्रगटाया है आपस का ये प्यार,

काकाजी के आशिष से है रचा,
गुरुजी ने नूतन गुणातीत, दिव्य परिवार ?

प्रगट प्रभु साथ हैं ऐसी, प्रतीति तुम्हीं ने कराई,
तन, मन, धन न्यौछावर जो कर दें, ऐसे भक्तों की महिमा समझाई,
पात्रता कोई देखी नहीं बस, अपनाया जो भी आया एक बार,

गुरुजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार ?

नया जन्म तुमने दिया जो, पुराना सभी हम भुला दें,
दिव्य ब्रह्मसमाज मिला है, उसकी सेवा में सर्वस्व लुटा दें,
गरज रख के, रांक हम बन कर, जीएं ले के तेरा ही आधार,

गुरुजी जो हमें अपनाते नहीं,
तो मिलता नहीं हमको ऐसा दिव्य परिवार ?
दिव्य परिवार..... योगी परिवार.....

❋ अन्नकूटोत्सव ❋

दिनांक 2 नवंबर, 2005, बुधवार की सुबह

गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन - 10:00 से 11:15

अन्नकूट आरती - 11:30 बजे

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित पधारने आपको हार्दिक निमंत्रण है।

❋ स्थान ❋

श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर, *'ताड़देव'*, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 21.9.2005, बुधवार – गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(2) दि. 27.9.2005, मंगलवार – भगवान स्वामिनारायण – स्मृति पर्व
(3) दि. 28.9.2005, बुधवार – एकादशी, ब्र. स्व. योगीजी महाराज – स्मृति पर्व
(4) दि. 29.9.2005, गुरुवार – ब्र. स्व. काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(5) दि. 30.9.2005, शुक्रवार – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी और ब्र. स्व. भगतजी महाराज– स्मृति पर्व
(6) दि. 1.10.2005, शनिवार – परम पूज्य दिनकरभाई का प्रागट्य दिन
(7) दि. 4.10.2005, मंगलवार – नवरात्रे प्रारंभ
(8) दि. 12.10.2005, बुधवार – दशहरा, प्र. ब्र. स्व. परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(9) दि. 14.10.2005, शुक्रवार – एकादशी, व्रत
(१०) दि. 17.10.2005, सोमवार – शरद्पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन
प्र. ब्र. स्व. परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
प. पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि
(11) दि. 19.10.2005, बुधवार – ब्र. स्व. परम पूज्य जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(12) दि. 28.10.2005, शुक्रवार – एकादशी, व्रत
(13) दि. 30.10.2005, रविवार – धनतेरस – दिल्ली-मंदिर में 'महापूजा', सायं 7:00 से 9:00
(14) दि. 1.11.2005, मंगलवार – दीवाली
(15) दि. 2.11.2005, बुधवार – अन्नकूटोत्सव–वार्षिक स्नेहमिलन, नूतन वर्ष प्रारंभ
(16) दि. 3.11.2005, गुरुवार – भैयादूज
(17) दि. 6.11.2005, रविवार – लाभपंचमी
(18) दि. 12.11.2005, शनिवार – प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months.
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

To